भगत कबीर – सबद १

जननी जानत सुतु बडा होतु है इतना कु न जानै जि दिन दिन अवध घटतु है ॥

रागु सिरिरागु, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ९१

जननी जानत सुतु बडा होतु है इतना कु न जानै जि दिन दिन अवध घटतु है ॥
मोर मोर करि अधिक लाडु धरि पेखत ही जमराउ हसै ॥१॥
ऐसा तैं जगु भरमि लाइआ ॥
कैसे बूझै जब मोहिआ है माइआ ॥१॥ रहाउ ॥
कहत कबीर छोडि बिखिआ रस इतु संगति निहचउ मरणा ॥
रमईआ जपहु प्राणी अनत जीवण बाणी इन बिधि भव सागरु तरणा ॥२॥
जां तिसु भावै ता लागै भाउ ॥
भरमु भुलावा विचहु जाइ ॥
उपजै सहजु गिआन मति जागै ॥
गुर प्रसादि अंतरि लिव लागै ॥३॥
इतु संगति नाही मरणा ॥
हुकमु पछाणि ता खसमै मिलणा ॥१॥ रहाउ दूजा ॥

सार: प्रकृति के नियम के अनुसार, दुनिया का हर हिस्सा अपने प्राकृतिक अस्तित्व को पूरा करने का प्रयास करता है, जैसे कोई कली खिलती है या बीज अंकुरित होता है। परिणामों से असंतोष जो स्वाभाविक है, डर पैदा कर सकता है और लोगों को उनकी पूरी क्षमता तक पहुँचने से रोक सकता है। यह सिद्धांत जीवन के हर पहलु पर लागू होता है जैसे व्यक्तिगत संबंध, भौतिक संपत्ति, समुदाय और आस्था। दुनयावी मोह से आगे बढ़कर हम जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में गहरे उद्देश्य और संतोष को विकसित कर सकते हैं।

जननी जानत सुतु बडा होतु है इतना कु न जानै जि दिन दिन अवध घटतु है ॥
माँ को यह लगता है कि उसका बच्चा हर दिन बढ़ रहा है; वह यह नहीं समझती कि हर दिन उसके जीवन में कमी हो रही है। यह मृत्यु के प्रति अज्ञानता को दर्शाता है।

मोर मोर करि अधिक लाडु धरि पेखत ही जमराउ हसै ॥१॥
मोह में डूबी माँ अपने बच्चे को "मेरा, मेरा" कहती है और मृत्यु की सच्चाई को नज़रअंदाज करती है। इस रूपक में मृत्यु का देवता उसकी इस अज्ञानता पर हंसता है। (१)

ऐसा तैं जगु भरमि लाइआ ॥
मोह ने आपको और संसार को भ्रम में डाल दिया है और इस भ्रम में सब भटक रहे हैं।

कैसे बूझै जब मोहिआ है माइआ ॥१॥ रहाउ ॥
जब मन मोह-माया में फंसा हो तब सच्चाई को कैसे समझ सकता है? (१)(विराम)

कहत कबीर छोडि बिखिआ रस इतु संगति निहचउ मरणा ॥
कबीर कहते हैं माया के झूठे सुखों का त्याग कर दो नहीं तो यह मोह, चेतना के अंत का कारण बनेगा।

रमईआ जपहु प्राणी अनत जीवण बाणी इन बिधि भव सागरु तरणा ॥२॥
सर्वव्यापकता का ध्यान करो। इस साधना से प्राणी जीवन की अनंतता को समझ कर इस माया-मोह रूपी संसार के भय को पार कर सकते हैं जैसे कोई भयानक सागर को पार करता है। (२)

जां तिसु भावै ता लागै भाउ ॥
जब कोई कुछ करने के लिए इच्छुक होते हैं, तो वे भक्ति के साथ खुद को समर्पित करते हैं।

भरमु भुलावा विचहु जाइ ॥
तब उनके भीतर से सभी भ्रम और अज्ञान दूर हो जाते हैं।

उपजै सहजु गिआन मति जागै ॥
उनके भीतर सहज ज्ञान उत्पन्न होता है और विवेक जागृत हो जाता है।

गुर प्रसादि अंतरि लिव लागै ॥३॥
विवेक की कृपा से व्यक्ति आत्मचिंतन और ध्यान में डूब जाता है। (३)

इतु संगति नाही मरणा ॥
ऐसी संगति से आध्यात्मिक चेतना का कभी पतन नहीं होता।

हुकमु पछाणि ता खसमै मिलणा ॥१॥ रहाउ दूजा ॥
प्रकृति के नियमों की गहराई को समझकर, व्यक्ति अपने भीतर बसे सर्वव्यापक साथी से मिल सकता है। (१)(विराम दूजा)

तत्त्व: भगत कबीर कहते हैं कि ज्ञान के शब्दों पर विचार करना, आत्म-चिंतन में लीन होना और जाग्रत आत्माओं से जुड़ना, आध्यात्मिक पतन को रोकने में सहायक होता है। प्रकृति के नियम जो मोह को छोड़ने की आवश्यकता पर जोर देते हैं, उनको समझकर हम अपने सच्चे स्वरुप और भीतर स्थित चेतना से जुड़ सकते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com